यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के अर्थशास्त्री राज साह ने प्रख्यात हिंदी विद्वान कामिल बुल्के का सम्मान किया

फादर कामिल बुल्के

राज साह ने बेल्जियम में जन्मे जेसुइट और प्रख्यात हिंदी विद्वान फादर कामिल बुल्के का सम्मान किया. प्रोफेसर साह ने नौक-हाईस्ट क्षेत्र के रम्सकपैल गांव में बुल्के की जन्मस्थली को एक स्मारक-पट्टिका भेंट की.

एक युवा जेसुइट के रूप में भारत आने के बाद 1982 में अपने देहावसान तक, बुल्के ने अपना अधिकांश समय सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज रांची में बिताया. संस्कृतियों की सीमायें पार कर, बुल्के आधुनिक हिंदी के एक आधार स्तंभ हो गए. उन्होंने भगवान राम महाकाव्य परंपरा पर, गोस्वामी तुलसीदास की अद्वितीयता पर, तथा अन्य लेखन-क्षेत्रों में मुलभूत योगदान दिया.
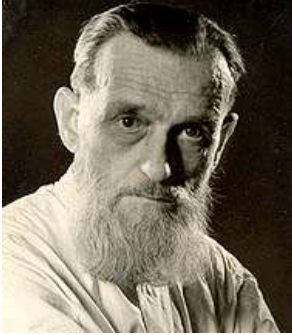
श्री साह ने बुल्के की मेंटरशिप की कृतज्ञता हेतु रम्सकपैल को स्मारक-पट्टिका भेंट की. नौक-हाईस्ट के मेयर, काउंट लियोपोल्ड लिपन्स ने पट्टिका के अनावरण के अवसर पर कहा, “हम बेल्जियम वासियों के लिए, एवं हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए, फादर बुल्के की भारत में बनाई धरोहर महत्वपूर्ण है. हम प्रोफेसर साह के आभारी हैं कि उन्होंने अपने मेंटर के जन्मस्थान पर उनकी श्रेय स्मृति को स्थायित्व दिया.”

स्मृति पट्टिका, कामिल बुल्के के सम्मान हेतु

डॉ. साह यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो में पब्लिक पॉलिसी तथा अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं. इन्हें जापानी सरकार ने अपने सम्राट की ओर से "द ऑर्डर ऑफ द राइजिंग सन, गोल्ड रेज विद नेक रिबन" से सम्मानित किया है. यह सम्मान जापान सरकार की आर्थिक और वित्तीय नीतियों में इनके योगदान के लिए मिला. श्री साह आईआईएम अहमदाबाद के डिस्टिंग्विश्ड फेलो हैं. ये पहले मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया, और येल यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रह चुके हैं.

राज साह, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो

सेंट जेवियर्स कॉलेज रांची के पूर्व प्राचार्य फादर निकोलस टेटे ने बताया, “फादर बुल्के ने जीवन भर बौद्धिकता का समन्वय विवेक और सद्‌गुणों के साथ किया. उनका और डॉ. साह का सबंध नितांत असाधारण था. यह नाता हम लोगों के लिए बड़ी प्रसन्नता का विषय रहा है. वर्तमान स्मृति पट्टिका इस संबंध का एक आदरणीय प्रतिबिंब है.”

यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो में मानवशास्त्र के एमेरिटस प्रोफेसर राल्फ निकोलस ने कहा, “भारतीय गुरु-शिष्य संबंध में विशिष्ट गहराई होती है. गुरु के प्रति शिष्य की भावना पर समय का, या गुरु का वर्षों पहले दिवंगत हो जाने का, कोई प्रभाव नहीं पड़ता."

Contact information: Ruhao Li. email: associate11associate@gmail.com